



डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

सेना द्वारा आकाश प्रक्षेपास्त्र का परीक्षण



आकाश प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण।

भारतीय सेना ने 18 जून 2014 को आकाश प्रक्षेपास्त्र का एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), बालासोर से नियर रेंज हाई एल्टीट्यूड परीक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया। आकाश सुपरसोनिक प्रक्षेपास्त्र का पहले से तैयार उत्पादन प्रारूप पर सेना द्वारा किये जा रहे सत्यापन (वेलीडेशन) परीक्षणों की श्रृंखला में यह अंतिम परीक्षण था। प्रक्षेपास्त्र ने सबसोनिक क्रूज प्रक्षेपास्त्र के विरुद्ध प्रणाली क्षमता साबित करते हुए समुद्र तल से 30 मीटर ऊँचाई छोटे

इस अंक में

- 120 मिमी पी सी बी गोला बारूद का विच्छेदन विस्फोट परीक्षण
- सुखोई-30 मार्क I से अस्त्र बी वी आर ए ए एम का सफल परीक्षण
- बी बी डी मार्क II का तकनीकी परीक्षण
- स्थापना दिवस समारोह
 - ✓ डी आर डी एल, हैदराबाद
 - ✓ डेसीडॉक, दिल्ली
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- कार्मिक समाचार
 - ✓ निदेशक, डेयर, बेंगलूरु
 - ✓ निदेशक, लेसटेक, दिल्ली
- पुरस्कार
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

आकार के मानव रहित तेजी से बढ़ने वाले 'वंशी' वायु वाहन को ध्वस्त कर दिया। निम्न ऊँचाई पर उड़ते हुए लक्ष्य वायु वाहन पर उच्च क्षमता युक्त रडार द्वारा निगरानी रखी गई। समुद्र से आने वाले बहु-लक्ष्य प्रतिबिम्बों पर काबू पाने के लिए डी आर डी ओ द्वारा विकसित विशेष अल्गोरिदम्स/तकनीकों ने मिशन के दौरान पूरी तरह से कार्य संपन्न किया। इस उड़ान परीक्षण के साथ, भारतीय सेना ने उत्पाद प्रतिमानों (मॉडल्स) पर सभी मान्य परीक्षणों को पूर्ण कर लिया है। अब यह प्रणाली सेना में आहरण हेतु तैयार है।

डॉ अविनाश चन्दर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव एवं रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन के महानिदेशक ने रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, निर्माण एजेन्सियों और सेना की टीमों को कम ऊँचाई में लक्ष्य को भेदने वाले सफल प्रदर्शन के लिए बधाई दी और कहा, "वायु रक्षा प्रौद्योगिकी में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में स्वेदशी विकास, निर्माण

तथा आकाश का आहरण बहुत ही महत्वपूर्ण है, तथापि, आकाश के निर्यात की वृहत संभावना भी है।”

आकाश के परियोजना निदेशक, श्री जी चंद्रमौली की देख-रेख में परीक्षणों को पूरा किया गया। महानिदेशक वायु प्रतिरक्षा, सेना के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई) के सह निदेशक, डॉ आर वी नारायण, एकीकृत परीक्षण परिसर के निदेशक, श्री एम वी के वी प्रसाद, भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के महाप्रबंधक, श्री एम एम हांडा, तथा भारत डॉयनेमिक्स लिमिटेड के तकनीकी निदेशक, श्री एन बी सिंह इस अवसर पर मौजूद थे।

हवाई हमलों से देश की महत्वपूर्ण सम्पत्ति की रक्षा और बचाव करने के लिए आकाश प्रक्षेपास्त्र वायु रक्षा शस्त्र प्रणाली का अभिकल्पन, विकास और निर्माण का नेतृत्व रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन द्वारा किया गया। सभी विकास परीक्षण एवं उपयोक्ता परीक्षणों को पूरा कर लिया गया है तथा भारतीय सेना तथा भारतीय वायु सेना के लिए इस प्रणाली का निर्माण-कार्य चल रहा

है। अत्याधुनिक तकनीकों को भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बी ई एल) और भारत डॉयनेमिक्स लिमिटेड (बी डी एल) जैसी प्रमुख निर्माण एजेंसियों में सफलतापूर्वक हस्तांतरित कर दिया गया है।

आकाश प्रक्षेपास्त्र तथा जमीनी प्रणाली के लिए सैन्य/अंतरिक्ष श्रेणी (एयरोस्पेस ग्रेड) गुणवत्ता के साथ 250 से ज्यादा उद्योग विभिन्न उप-प्रणालियों/घटकों के निर्माण और आपूर्ति में लगे हुए हैं। भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बी ई एल) और भारत डॉयनेमिक्स लिमिटेड (बी डी एल), सशस्त्र बल द्वारा दिये गये 20000 करोड़ रुपयों की कीमत से भी ज्यादा की आकाश मिसाइल प्रणाली के लिए उत्पादन आदेश के क्रियान्वयन में लगे हुए हैं।

इसके अलावा तीनो सेनाओं द्वारा त्रियामी केन्द्रीय अधिग्रहण, आकाश प्रक्षेपास्त्र प्रणाली की एक प्रशाखा (ऑफशूट) के लिए स्वतंत्र आदेश भी दिया गया है। 3500 करोड़ रुपयों की लागत के आकाश प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों का उत्पादन पहले से किया जा चुका है और सेवाओं के लिए दे भी दिया गया है।

120 मिमी पी सी बी गोला बारूद का विच्छेदन विस्फोट परीक्षण

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर में 02-06 जून 2014 के दौरान एम बी टी अर्जुन के लिए 120 मिमी पी सी बी गोला बारूद के गतिशील परीक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किए गए। टोस तथा लचीले लक्ष्यों के विरुद्ध एम बी टी अर्जुन की मारक क्षमताओं में सुधार के लिए नए प्रकार के गोला बारूद का अभिकल्पन, जैसे कि आंतरिक विस्फोट से टोस कंक्रीट लक्ष्यों हेतु पी सी बी। इन्हें न केवल क्षेत्रीय तथा नियंत्रण रेखा के बंकरों के विरुद्ध बल्कि भविष्य में शहरी युद्ध में भी प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता है।

पी सी बी प्रक्षेपी द्वारा लक्ष्य की सुरक्षात्मक परत को भेद कर आन्तरिक विस्फोट से ध्वस्त किया जाता है। प्रस्तावित प्रक्षेपक में नियंत्रण रेखा (एल ओ सी) बंकरों, प्रशासनिक भवनों, क्षेत्रीय किले बंदी आदि को ध्वस्त करने की क्षमता है। इन लक्ष्यों को या तो अकेले कंक्रीट से या

कंक्रीट और मिट्टी के विभिन्न मोटाई वाले संयोजनों द्वारा संरक्षित किया गया है। लक्ष्य के भीतर गोला बारूद का आंतरिक विस्फोट दबाव और आवेग अवधियों पर दो से तीन गुना विस्फोट तरंगों को निर्मित और परिलक्षित करेगा।

पी सी बी प्रक्षेपी में 1.5 किमी से भी ज्यादा की रेंज में 500 मिमी तक मोटी कंक्रीट की दीवार को भेदने की क्षमता है। लक्ष्य पर चोट लगने के पश्चात् पूर्व निर्धारित देरी के संवेदन प्रभाव के बाद बारूद का इलैक्ट्रोमैकेनिकल फ्यूज अपना कार्य करता है। प्रक्षेपी में 2.6 किग्रा उच्च ऊर्जावान विस्फोटक भरा हुआ है जो विस्फोट बिन्दु के चारों ओर लगभग 0.2 किलो/सेमी² का दबाव उत्पन्न करता है। फ्यूज में स्व: विनाशक क्षमता है। गोला बारूद इतना सटीक है कि 1 किमी की दूरी पर 1मी×1मी तक के लक्ष्य को भेद सकता है।

सुखोई-30 मार्क I से अस्त्र बी वी आर ए ए एम का सफल परीक्षण



सुखोई-30 मार्क I से अस्त्र बी वी आर ए ए एम का सफलतापूर्वक परीक्षण।

20 जून 2014 को हवा से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र अस्त्र बी वी आर का गोवा से दूर एक नौसैनिक सीमा से भारतीय वायु सेना द्वारा सुखोई-30 मार्क I से सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। 6 किमी उन्नांश (ऊँचाई) से किया गया प्रक्षेपण एक नियंत्रक और मार्गदर्शक उड़ान थी जिसने लम्बी दूरी पर इलैक्ट्रॉनिक कृत्रिम लक्ष्य को भेदने का एक सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया और एक हथियार प्रणाली के रूप में 'अस्त्र' की वायुगतिकीय विशेषताओं, पुनरावृत्ति, मजबूती और सहनशीलता का प्रदर्शन किया।

टीम को बधाई देते हुए डॉ अविनाश चन्दर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सहाकार ने टीम के रूप में एक साथ काम कर रहे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) तथा भारतीय वायु सेना के संयुक्त प्रयासों को

विकास परीक्षणों की सफलता के फलीभूत होने का श्रेय दिया। आपने पश्चिमी तट में भारी मानसून के बावजूद वायु सेना की परीक्षण टीम, ए एस टी ई द्वारा परीक्षण पूर्ण करने के लिए विशेष रूप से बधाई दी।

डॉ वी जी सेकरन, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (प्रक्षेपास्त्र तथा सामरिक प्रणाली) ने कहा कि हवा से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र के अभिकल्पन तथा क्रियान्वयन में अस्त्र विकास परीक्षणों की निरंतर सफलता डी आर डी ओ की परिपक्वता की पुष्टि करते हैं। परियोजना निदेशक, डॉ एस वेणुगोपाल ने कहा कि वायु सेना के पूर्ण समर्थन के साथ निर्धारित अस्त्र बी वी आर ए ए एम के हवाई परीक्षण होने जा रहे हैं तथा भारतीय वायु सेना के सभी प्रदर्शन आवश्यकताओं को पूरा करेंगे।

बी बी डी मार्क II का तकनीकी परीक्षण

बी बी डी मार्क II का तकनीकी परीक्षण सेना द्वारा 2 मई 2014 को चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ में किया गया। मेजर जनरल राकेश बस्सी, मुख्य अभियंता, पश्चिमी कमान, चंडी मंदिर; मेजर जनरल विशंभर नाथ, महानिदेशक (सी ई); तथा टी बी आर एल के निदेशक डॉ मनजीत सिंह इस अवसर पर मौजूद थे। यह बी बी डी मार्क I का एक उन्नत संस्करण के रूप में एक नया उपकरण है जो तीन ऐरे उपकरणों के साथ उतना ही प्रभाव पैदा करने में सक्षम है जितना पहले छः ऐरे उपकरणों के साथ होता था। यह क्षेत्र में ले जाने में आसान है तथा स्थापित करते वक्त यह सटीक गड़्ढा बनाता है।



परीक्षण स्थल पर मेजर जनरल बस्सी, मेजर जनरल विशंभर नाथ तथा डॉ मनजीत सिंह।

स्थापना दिवस समारोह

रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद



डी एल आर एल की कॉफी टेबल बुक के विमोचन का दृश्य।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद ने 28 जून 2014 को अपना 53वां वार्षिक दिवस मनाया। रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, श्री अविनाश चन्दर, इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। डॉ वी जी सेकरन, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (प्रक्षेपास्त्र तथा सामरिक प्रणाली) समारोह के सम्मानीय अतिथि थे। श्री वाई वी रत्ना प्रसाद, डी ओ एम एस, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला ने अतिथियों का स्वागत किया। श्री अविनाश चन्दर, डॉ वी जी सेकरन तथा श्री सिबनाथ सोम, निदेशक, डी आर डी एल ने सभा को संबोधित किया।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने डी आर डी एल द्वारा किये गये विभिन्न प्रक्षेपास्त्र परियोजनाओं के सफल प्रक्षेपण के लिए डी आर डी एल परिवार को बधाई दी और आने वाले वर्षों में इसके महत्त्व पर बल दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा *ए सागा ऑफ रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला*, कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया गया। सम्मानित अतिथि द्वारा डी आर डी एल पर एक वृत्तचित्र का वीडियो जारी किया गया। इस अवसर पर श्रीमती वंदना कुमार, आई एफ ए ने डी आर डी एल की गृह पत्रिका 'विबग्योर' का विमोचन किया।

विभिन्न श्रेणियों के तहत प्रयोगशाला पुरस्कार वितरित किये गये। स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली



डेसीडॉक वार्षिक दिवस के उद्घाटन समारोह का दृश्य।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली ने बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ 30 जुलाई 2014 को अपना 44वां स्थापना दिवस समारोह मनाया। डॉ जी मालकोण्डेया, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन) समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा डॉ किरण बेदी, भूतपूर्व आई पी एस, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुईं। डॉ किरण बेदी ने महिला सशक्तिकरण नामक विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान भी दिया। इस अवसर पर आपने विभिन्न श्रेणियों के तहत प्रयोगशाला पुरस्कार भी प्रदान किए। इस समारोह में डी आर डी ओ मुख्यालय तथा डी आर डी ओ की स्थानीय प्रयोगशालाओं के निदेशकों तथा बड़ी संख्या में डेसीडॉक के भूतपूर्व/सेवानिवृत्त कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के सदस्यों ने भाग लिया। डेसीडॉक के निदेशक, श्री सुरेश कुमार जिंदल ने अपने



डेसीडॉक वार्षिक दिवस का उद्घाटन करती हुई डॉ किरण बेदी।



वार्षिक दिवस उद्बोधन देते हुए डॉ किरण बेदी।

उद्घाटन भाषण में समारोह में आए अतिथियों का स्वागत किया। श्री जिंदल ने गत वर्ष के दौरान डेसीडॉक द्वारा किए गए कार्यों के बारे में अतिथियों को अवगत कराया तथा समारोह में इतनी अधिक संख्या में उपस्थित होने के लिए संस्थान के भूतपूर्व कर्मचारियों के प्रति अपना आभार प्रकट किया।



डेसीडॉक वार्षिक दिवस के अवसर पर उपस्थित गणमान्य अतिथिगण।

डेसीडॉक के कर्मचारियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन स्थापना दिवस समारोह की विशेषता रही। कार्यक्रम के अंत में स्थापना दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित किए गए विभिन्न खेलकूद कार्यक्रमों के विजेताओं को श्री जिंदल द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। श्री अशोक कुमार, सह-निदेशक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सम्मेलन/सेमिनार/विचार-गोष्ठी/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/बैठक

जमीनी और हवाई युद्ध प्रणाली के लिए भावी प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला



श्री एस सुंदरेश के सम्मान समारोह का दृश्य।

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई ने 26 मई, 2014 को भावी प्रौद्योगिकियों पर जमीनी और हवाई समाघात प्रणालियों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र के दौरान, डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, सी वी आर डी ई ने

अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। संक्षेप में सी वी आर डी ई के सामान्य, तकनीकी तथा अभियांत्रिकी प्रणाली के प्रयासों में जमीनी तथा हवाई लड़ाई प्रणालियों के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) के योगदान के लिए रेखांकित किया। श्री ए एम दातार, महानिदेशक (ए सी ई) ने कार्यशाला का उद्घाटन किया तथा उद्घाटन उद्बोधन भी दिया।

कार्यशाला एक जमीन की भावी प्रौद्योगिकी तथा दूसरी वायु लड़ाकू प्रणाली (एयर कोम्बेट सिस्टम) की भावी प्रौद्योगिकियों जैसे दो तकनीकी सत्रों के साथ आगे बढ़ी। जमीन लड़ाकू प्रणाली (लैंड कोम्बेट सिस्टम) पर तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ के तमिलमणी, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (एयरो) ने उल्लेख किया कि डी आर डी ओ भारतीय पारिस्थितिक प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयोक्ताओं को एक बहु प्रौद्योगिकीय आधारित दुष्कर प्रणाली दे रहा है। श्री दातार ने सत्र की सह-अध्यक्षता की। तकनीकी सत्र के हिस्से के रूप में ए एफ वी टैक्नॉलोजीज, हथियार तथा गोला बारुद प्रणाली तथा उन्नत अग्नि नियंत्रण प्रणाली के

लिए इलैक्ट्रो ऑप्टिक साइटिंग सिस्टम पर प्रसिद्ध वक्ताओं द्वारा अपनी प्रस्तुतियाँ दी गयीं।

वायु लड़ाकू प्रणाली (एयर कोम्बेट सिस्टम्स) की भावी प्रौद्योगिकियों पर तकनीकी सत्र में श्री एस सुंदरेश, पूर्व विशिष्ट वैज्ञानिक और महानिदेशक (ए सी ई) ने सभा की अध्यक्षता की तथा डॉ शिवकुमार ने सभा की सह अध्यक्षता की। श्री सुंदरेश ने वैमानिकी क्षेत्र में डी आर डी ओ द्वारा वायु लड़ाकू प्रणाली पर उठाये गये महत्वपूर्ण कदम और प्रगति के बारे में बताया। प्रख्यात वक्ताओं द्वारा स्वदेशी विमान प्रणाली, मानव रहित हवाई प्रणाली और भावी ऊर्जा संयंत्रों में प्रमापीकरण की चुनौतियों के लिए भावी प्रौद्योगिकियों पर अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दी गयीं। कार्यशाला के दौरान श्री सुंदरेश को संगठन में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद की कॉरपोरेट समीक्षा

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद की कॉरपोरेट समीक्षा का आयोजन डॉ जी मालकोण्डैया, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन) और लेफ्टिनेंट जनरल अनूप मल्होत्रा, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (आर एंड एम) की अध्यक्षता में 22 मई 2014 को किया गया था। डॉ हिना गोखले, निदेशक, मानव संसाधन विकास निदेशालय; मेजर जनरल अजय गुप्ता, निदेशक, सतर्कता, तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय के विभिन्न निदेशालयों के प्रतिनिधियों ने समीक्षा में भाग लिया। डॉ अमोल ए गोखले, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी एम आर एल ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन भाषण में लेफ्टिनेंट जनरल मल्होत्रा ने कॉरपोरेट समीक्षा के उद्देश्य का स्वास्थ्य और प्रयोगशाला के पर्यावरण तथा कॉरपोरेट मुद्दों (यदि कोई हों) को हल करने में प्रयोगशाला की सहायता करने के रूप में उल्लेख किया।

डॉ गोखले ने प्रयोगशाला की गतिविधियों का अवलोकन किया और प्रयोगशाला की कॉरपोरेट संरचना, मानव संसाधन वितरण, बजटीय प्रवृत्तियाँ और अनुसंधान परिषद, मानव संसाधन परिषद, शिकायत प्रकोष्ठ और महिला सेल जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण निकायों के कार्यों पर विस्तारपूर्ण व्याख्यान दिया। एक विस्तृत और मनोरम प्रस्तुति में डॉ गोखले ने चल रही परियोजनाओं की स्थिति

तथा प्रयोगशाला की उपलब्धियों के साथ साथ आर एफ डी के लक्ष्यों पर भी प्रकाश डाला। अगले दशक के लिए उन्होंने डी एम आर एल की प्रौद्योगिकी रूपरेखा पर भी प्रकाश डाला। श्री आनन्द राव, डॉ विजय सिंह, डॉ टी रघु, सभी वैज्ञानिक जी; श्री आर गुरु प्रसाद, वैज्ञानिक एफ, श्री एस शशि नाथ, वैज्ञानिक डी के द्वारा अन्य कॉरपोरेट मुद्दों को भी प्रस्तुत किया गया।

अपने समापन भाषण में डॉ मालकोण्डैया ने टेलर मेड प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा भविष्य की आवश्यकताओं तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डी एम आर एल संघ, निर्माण समिति और जे सी एम चतुर्थ के सदस्यों के साथ एक बैठक का भी आयोजन किया गया। अंत में युवा वैज्ञानिकों के एक समूह को मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर प्रदान किया गया।

रसायनिक तथा जैव रसायनिक आपात स्थिति पर उन्नत पाठ्यक्रम

रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर द्वारा राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल और भारतीय वायु सेना के अधिकारियों के लिए 5-6 जून 2014 के दौरान रसायनिक तथा जैव रसायनिक आपात स्थिति पर उन्नत पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए लगभग 30 अधिकारियों को रसायनिक तथा जैविक प्रतिनिधियों (एजेन्टों) की पहचान, सुरक्षा एवं परिशोधन पर प्रशिक्षण दिया गया। पाठ्यक्रम में सी बी डब्ल्यू एजेन्टों के प्रबंधन पर व्यावहारिक प्रदर्शनों वाले विशेष व्याखानों को शामिल किया गया। डॉ ए के गोयल, वैज्ञानिक ई सभी पाठ्यक्रमों के लिए समन्वयक थे। प्रो. डॉ एम पी कौशिक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी आर डी ई ने पाठ्यक्रम के सफल समापन पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये।

अनुसंधान परिषद की बैठक

रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर की प्रयोगशाला अनुसंधान परिषद (एल आर सी) की पहली बैठक 17 जून 2014 को आयोजित की गयी। प्रयोगशाला अनुसंधान परिषद में अध्यक्ष, सह अध्यक्ष और सभी प्रभाग प्रमुखों, शिक्षा तथा



अनुसंधान परिषद की बैठक का दृश्य ।

अनुसंधान संस्थानों के विशेषज्ञों तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) के नामित वैज्ञानिकों को शामिल किया गया।

राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे के पूर्व निदेशक, डॉ ए के मिश्रा ने बैठक की अध्यक्षता की। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली, नई दिल्ली के प्रो बी जी देशमुख; केन्द्रीय औषधि अनुसंधान, लखनऊ के डॉ आर पी त्रिपाठी; डॉ शशिबाला सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली; रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय के पूर्व निदेशक, डॉ नरेन्द्र कुमार तथा डॉ बी आर गांधे आदि ने विशेष सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया। प्रो. डॉ एम पी कौशिक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी आर डी ई ने अध्यक्ष तथा सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने प्रयोगशाला अनुसंधान परिषद के चार्टर, भूमिका और कार्यों पर प्रकाश डाला तथा डी आर डी ई में चल रही अनुसंधान गतिविधियों का अवलोकन किया।

डॉ डी के दुबे, वैज्ञानिक जी; डॉ एम एम परिदा, वैज्ञानिक एफ; तथा डॉ डी वी कम्बोज द्वारा 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान क्रमशः रसायनिक रक्षा, जैव रक्षा तथा जैव आपदा प्रौद्योगिकी पर परियोजनाएँ शुरू किये जाने का प्रस्ताव रखा गया। डॉ मिश्रा ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना में चल रही अनुसंधात्मक गतिविधियों की सराहना की। परिषद ने रसायन जैव रक्षा और जैव आपदा प्रौद्योगिकी के मुद्दों पर चर्चा की और भविष्य में होने वाले अनुसंधान के लिए लक्ष्यों की सिफारिश की।

युवा वैज्ञानिकों के लिए संगोष्ठी (सेमिनार)

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु द्वारा 07 जून 2014 को युवा वैज्ञानिकों के लिए 18वीं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ बी एन सुरेश, विक्रम साराभाई विशिष्ट प्रोफेसर, इसरो मुख्यालय



डॉ सी पी रामनारायणन, निदेशक, जी टी आर ई, डॉ बी एन सुरेश (दाएँ) को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

ने राष्ट्रीय विकास तथा भविष्य दिशाओं के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी पर एक आमंत्रित व्याख्यान दिया। अपने उत्कृष्ट व्याख्यान में डॉ सुरेश ने राष्ट्रीय और सामाजिक जरूरतों के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की अपार क्षमता पर प्रकाश डाला।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु के श्री चन्दू फर्नांडो डी, वैज्ञानिक सी ने भी गैस टरबाइन इंजनों के घटकों के लिए सामग्री परीक्षण और डाटा गतिविधियों पर एक भाषण दिया। उन्होंने इंजन विकास कार्यक्रमों के लिए सामग्री की विशेषताओं के महत्व पर बल दिया।

प्रणाली अभियांत्रिकी पर आमंत्रित वार्ता



डॉ एन प्रभाकर, व्याख्यान देते हुए।

डॉ एन प्रभाकर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एस ए एम) ने 11 जून 2014 को गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु में प्रणाली अभियांत्रिकी (सिस्टम इंजीनियरिंग)

और भारतीय गार्डेड मिसाइल कार्यक्रम पर आमंत्रित वार्ता व्याख्यान दिया। अपने भाषण में उन्होंने प्रणाली विश्लेषण और मॉडलिंग गतिविधियों को अधिकतम करने की जरूरतों पर बल दिया और प्रणालियों की प्रणाली का प्रबंधन करने के लिए एक औपचारिक प्रणाली की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। यद्यपि प्रौद्योगिकी का सही चुनाव करना एक पुनरावृत्तीय प्रक्रिया है, प्रणाली की आवश्यकताओं को अंतिम रूप देते हुए कार्यक्रम के कैपस्टोन की पहचान करना मुश्किल है। उन्होंने सुझाव दिया कि परियोजना समूह को विभिन्न समाधान दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए प्रणाली अभियांत्रिकी को एक स्वतंत्र इकाई रूप में होना चाहिए।

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी की वार्षिक आम परिषद बैठक

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी ने 29-30 मई 2014 के दौरान वर्ष 2014-15 के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन खेल बोर्ड की वार्षिक आम परिषद बैठक (ए जी सी एम) का आयोजन किया। श्री पी एम एस राजन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरु; डॉ मनजीत सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़; श्री के एम राजन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आयुध अनुसंधान विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे तथा डी आर डी ओ साहसिक कार्य (एडवेंचर) तथा विभिन्न क्षेत्रीय परिषदों के 27 प्रतिनिधियों ने वार्षिक आम परिषद बैठक में भाग लिया। प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान के निदेशक, डॉ एस बी सिंह ने अपने भाषण में सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उन्होंने टीम निर्माण के लिए खेल गतिविधियों के महत्व पर बल दिया और प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान की गतिविधियों तथा उपलब्धियों को प्रस्तुत किया।

डॉ मनजीत सिंह ने टी बी आर एल द्वारा आयोजित उत्तरी क्षेत्र के सभी खेल गतिविधियों की एक झलक दिखलायी। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) खेल बोर्ड के महासचिव, श्री विपुल गुप्ता ने डी आर डी ओ खेल बोर्ड की गतिविधियों को प्रस्तुत किया। एडवेंचर क्लब और क्षेत्रीय परिषदों के प्रतिनिधियों के द्वारा भी प्रस्तुतियाँ दी गयीं। श्री पी एम एस राजन ने टीम भावना को बढ़ावा देने और एकजुट टीम को निर्माण करने के लिए एक प्रभावी माध्यम के रूप में खेलों के

महत्व पर बल दिया। इस अवसर पर वार्षिक आम परिषद बैठक (ए जी सी एम) में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों और गणमान्य व्यक्तियों के लिए सुबह की सैर का भी आयोजन किया गया।

टी ई आर आई एस एम आई सी पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी)



पाठ्यक्रम की सामग्री के विमोचन का दृश्य।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर द्वारा 23-27 जून 2014 के दौरान टी ई आर आई एस एम आई सी पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 24 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण निवेश पर वापसी, टीम का निर्माण, एटीट्यूड मैटर्स, पारस्परिक संबंध, पारस्परिक संचार, एफ आई आर ओ-बी, लीडरशिप विकास, सात आदतें, प्रेरणा, भावनात्मक समझ, दक्षता का विकास, संघर्ष प्रबंधन और बात-चीत कौशल आदि जैसे विषयों को प्रमाण और प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई) और एफ एम विश्वविद्यालय, बालासोर के विशेषज्ञ संकायों द्वारा कवर किया गया। एम्स, भुवनेश्वर के निदेशक, प्रो ए के माहापात्र उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री आर अप्पावुराज, निदेशक, पी एक्स ई; डॉ पी के दास गुप्ता, वैज्ञानिक एफ; डॉ ए के सन्निग्रही, वैज्ञानिक एफ; तथा श्री एस के जेना, तकनीकी अधिकारी सी के साथ श्री महापात्र ने भी पाठ्यक्रम सामग्री जारी की। अपने उद्घाटन भाषण में श्री महापात्र ने प्रबंधन विकास कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए पी एक्स ई के प्रयासों की सराहना की। श्री अप्पावुराज ने यह भी कहा कि सफलता प्राप्त करने के लिए सकारात्मक रवैया और पारस्परिक संबंध का होना बहुत महत्वपूर्ण है।

हिन्दी कार्यशाला

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर द्वारा 16-20 जून 2014 के दौरान प्रशासनिक समूह के कर्मचारियों के लिए 57वीं हिन्दी कार्याशाला का

आयोजन किया गया। श्री आर अप्पावुराज, निदेशक, पी एक्स ई ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि हिन्दी में सरकारी कामकाज को पूरा करने के लिए यह कार्यशाला उपयोगी सिद्ध होगी। डॉ ए के सन्नीग्रही, वैज्ञानिक एफ ने संक्षेप में हिन्दी की उत्पत्ति और विकास के बारे में समझाया और राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया।



कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्वलन का दृश्य।

20 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया। श्री एस के रे, हिन्दी अधिकारी; श्रीमती अनीता परिदा, वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक; तथा सुश्री पूजा सिंह, हिन्दी सहायक, द्वारा हिन्दी की कार्य पद्धति पर विस्तार से चर्चा की। समापन समारोह में निदेशक द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

रक्षा तथा अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए ऑन बोर्ड पावर सोर्स पर कार्यशाला

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा 12-13 जून 2014 के दौरान रक्षा तथा अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए ऑन बोर्ड पावर सोर्स पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ एस बी गाडगिल, सह निदेशक, आर सी आई ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। कार्यशाला में विभिन्न पावर सोर्स प्रौद्योगिकियों पर एक तकनीकी चर्चा रखी गयी। लिथियम आयन बैटरी, माइक्रो बैटरी, सुपर कैपेसिटर, थर्मो-इलेक्ट्रिक जनरेटर, अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए ऊर्जा स्रोत, फ्यूल सेल्स (निम्न और उच्च तापमान), एस ओ एफ सी, भावी थर्मल बैटरी, योग्यता स्तर आदि पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और आई आई ए सी के विशेषज्ञों, ए आर सी आई, चेन्नई, सी-मेट, केरल, सी जी सी आर आई, कोलकाता, इसरो, बेंगलूरु, नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एन एम आर एल), अंबरनाथ तथा बैटरी उद्योग जैसे विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संस्थानों



उद्घाटन अवसर पर उद्बोधन देते हुए डॉ एस बी गाडगिल।

के तकनीकी विशेषज्ञों ने अतिथि व्याख्यान दिये। रक्षा पर भावी ऊर्जा स्रोतों पर चर्चा करने के लिए श्री डी एस रेड्डी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन फेलो की अध्यक्षता में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। भावी रक्षा अनुप्रयोग के लिए लिथियम आयन बैटरी प्रौद्योगिकी ने सबसे लोकप्रिय तकनीकी के रूप में स्कोर प्राप्त किया।

नेवीगेशन प्रणाली और सेंसर के भावी रुझानों पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला

19-20 जून 2014 को नेवीगेशन और एम्बेडेड कम्प्यूटर्स निदेशालय, अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा भावी नेवीगेशन सेंसर और प्रणालियों पर एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य भारत और विदेशों के अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, शैक्षणिक समुदाय और उद्योगों के पेशेवरों को नेवीगेशन सेंसरों, प्रणालियों, जी एन एस एस प्रौद्योगिकियों, जी एन एस एस रिसेवर्स और संबंधित क्षेत्रों में उभर रही भावी प्रौद्योगिकियों पर चर्चा करने के लिए एक साझा मंच तैयार करना था।

श्री बी एच वी एस नारायणमूर्ति, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा सह निदेशक, आर सी आई ने गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। श्री जी सतीश, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आर सी आई ने उद्घाटन भाषण दिया। डॉ वी के सारस्वत, डी ए ई होमीभाभा समारोह के मुख्य अतिथि और डॉ वी जी सेकरन, महानिदेशक (एम एम एस) सम्मानित अतिथि थे। टाटा फंडामेंटल अनुसंधान संस्थान, मुम्बई से प्रो. उन्नीकृष्णनन, मैसर्स सेंसोनोर टेक्नॉलोजी, नार्वे से श्री तेजे केविस्तेरोए, कोरयाई विश्वविद्यालय से प्रो री एस और मैसर्स तामन से श्री जोसेफ लूईस गूवर ने क्रमशः ए आई आधारित इनेरिशियल सेंसर, ट्रेंड इन हाई प्रीसीजन एम ई एम एस गार्डरोस्कोप, हेमिस्फेरियल रिसोनेटर गाइरो डिजाइन एंड नेवीगेशन सेंसर एंड सिस्टम्स पर व्याख्यान दिये।

इसके अलावा आई एस ए सी, इसरो से श्री ए कार्तिक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई से प्रो राजा बाबू, मैसर्स डेन्से लाईट, सिंगापुर से डॉ लाम ली लो, तथा एकोर्ड सॉफ्टवेयर सॉल्यूशन से श्री एन एस सुधीर ने क्रमशः इंडियन सैटेलाइट नेवीगेशन, एडवांस इन डाटा फ्यूजन एल्गोरिदम, हाई परफॉर्मेंस फाइबर ऑप्टिक गाइरोस्कोप और कवर्जेंस ऑफ सॉल्यूशंस इनटू ए फ्यूचर जी एन एस एस पर व्याख्यान दिये।

एंबेडेड सिस्टम तथा वी एल एस आई डिजाइन प्रवृत्तियों पर कार्यशाला

25 जून 2014 के दौरान नेवीगेशन और एंबेडेड कम्प्यूटर निदेशालय, अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने एंबेडेड सिस्टम तथा वी एल एस आई डिजाइन प्रवृत्तियों पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। अनुसंधान केन्द्र इमारत के उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा सह निदेशक, श्री बी एच वी एस नारायण मूर्ति ने स्वागत भाषण दिया। श्री जी सतीश रेड्डी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, अनुसंधान केन्द्र इमारत ने उद्घाटन भाषण दिया। आर सी आई के पूर्व निदेशक, श्री के वी एस एस प्रसाद राव मुख्य अतिथि और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास के प्रो शान्ति पवन को सम्माननीय अतिथि बनाया गया था। विभिन्न वक्ताओं ने कार्यशाला के दौरान अपने व्याख्यान दिये।

फ्लूड पावर प्रोफेशनल्स डे

अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे द्वारा पुणे चैप्टर, भारतीय फ्लूड सोसायटी (एफ पी एस आई) के साथ मिलकर फ्लूड पावर प्रोफेशनल्स डे का प्रायोजन और आयोजन किया। फ्लूड पावर प्रोफेशनल्स डे एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम है और दुनिया भर में वैज्ञानिक ब्लेसे प्लास्कल की सालगिरह के रूप में और फ्लूड पावर पर उनके योगदान के स्मरण के लिए मनाया जाता है।

गोवा के माननीय मुख्यमंत्री, श्री मनोहर पर्रीकर समारोह के मुख्य अतिथि थे। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने भारत में हाईड्रोलिक्स की प्रगति पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की भूमिका की सराहना की। श्री ए एम दातार, महानिदेशक (ए सी ई) समारोह में सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ एस गुरुप्रसाद

उत्कृष्ट वैज्ञानिक और निदेशक, अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियर्स) जो एफ पी एस आई, पुणे चैप्टर के अध्यक्ष भी हैं, ने स्वागत भाषण दिया तथा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियर्स) तथा फ्लूड पावर प्रोफेशनल्स की एसोसिएशन के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने एफ



उद्घाटन अवसर पर उद्बोधन देते हुए श्री मनोहर पर्रीकर।

पी एस आई, पुणे चैप्टर के मिशन और गतिविधियों पर भी बात की। श्री दातार ने अपने भाषण में हथियारों के परीक्षणों में हाईड्रोलिक्स के उपयोग पर जोर दिया। प्रतिनिधियों और गणमान्य व्यक्तियों ने अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियर्स) में विश्वेश्वरया स्वर्ण जयन्ती प्रदर्शनी हॉल का दौरा किया जहाँ विभिन्न उत्पादों के मॉडल्स प्रदर्शित किये गये थे। कुछ प्रणालियों का लाइव प्रदर्शन भी दिया गया था। समारोह के दौरान मैसर्स एल एंड टी, पवई से श्री ए टी रामचंदानी ने रक्षा उद्योग में फ्लूड पावर में एल एंड टी के योगदान पर, मैसर्स हाईडेयर, मुम्बई से श्री नादिर एस कराचीवाला ने हाईड्रोलिक फिटिंग पर भारतीय मानक तैयार करने और श्री के सी अरोड़ा द्वारा भारत में हाईड्रोलिक उद्योग के इतिहास पर भी आमंत्रित वार्ता की गयी।

राजभाषा कार्यशाला

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा 25 जून 2014 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष, श्री के रामशर्मा ने कार्यशाला का उद्घाटन किया तथा श्री एन वैकटेश, वैज्ञानिक एफ तथा सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने हिन्दी अनुभाग की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। श्री काजिम अहमद, वरिष्ठ हिन्दी सहायक ने राजभाषा नीति, नियम तथा विनियम पर एक व्याख्यान दिया और श्री वैकटेश ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के पुस्तकालयों (लाइब्रेरीज) – टूडे और टूमरो पर एक व्याख्यान दिया। 22 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया और अनुवाद में एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी।



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सूचना प्रौद्योगिकी: कल, आज, और कल

फरवरी 2015, दिल्ली, भारत

Bilingual International Conference Information Technology: Yesterday, Today, and Tomorrow

February 2015, Delhi, India

मुख्य संरक्षक : डॉ अविनाश चंद्र, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं महानिदेशक रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन

Chief Patron : Dr. Avinash Chander, SA to RM, Secretary, Defence R&D, and DG, DRDO

संरक्षक : डॉ जी मालकोंड्या, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन)

Patron : Dr. G Malakondaiah, DS and CC R&D (HR)

सम्मेलन का उद्देश्य

सूचना प्रौद्योगिकी: कल आज और कल नामक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य अकादमिकगणों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, तथा विद्वानों के मध्य परस्पर विचार-विमर्श, उनके द्वारा किए गए शोध पर परिचर्चा, तथा नवीन विधाओं का सृजन है। इस सम्मेलन से बहुआयामी शोधपरक विचारों का सृजन, अद्यतन प्रौद्योगिकियों की समालोचना, प्रौद्योगिकीय अनुप्रयोग में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियां, सामाजिक सरोकारों, तथा नवीन शोध की दिशाएं स्थापित होंगी।

Conference Objective

The International Conference on Information Technology: Yesterday, Today, and Tomorrow; aims to bring together leading academicians, scientists, researchers, and research scholars to exchange and share their experiences, and research results about all aspects of information technology. It also provides the premier interdisciplinary forum for researchers, practitioners and educators to present and discuss the most recent innovations, trends, concerns, practical challenges encountered, and the solutions adopted in the field of information technology.

Important Dates

Conference Dates: Second half of February 2015

Paper submissions

Full paper submission: 01 December 2014

Notification of acceptance: 20 December 2014

Organising centre : Defence Scientific Information & Documentation Centre (DESIDOC) DRDO, Metcalfe House Delhi-110054

महत्वपूर्ण तिथियां

सम्मेलन की तिथियां: फरवरी 2015 के दूसरे पखवाड़े में पूर्ण आलेख प्राप्त करने की अंतिम तिथि: 01 दिसम्बर 2014
सम्मेलन हेतु आलेख के चयन की सूचना: 20 दिसम्बर 2014

आयोजक: रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डिसेडॉक), डी आर डी ओ, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054

संपर्क

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डिसेडॉक

श्री फूलदीप कुमार, प्रमुख, डिजिटल संग्रह, विज्ञान संचार, तथा राजभाषा प्रभाग
रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डिसेडॉक), मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054
दूरभाष: 011-23902530, ई-मेल: director@desidoc.drdo.in, itconf2015@gmail.com

Contact

Shri Suresh Kumar Jindal, Director, DESIDOC

Shri Phuldeep Kumar, Head, Digital Archive, Science Communication, and Official Language Division
Defence Scientific Information & Documentation Centre (DESIDOC), DRDO, Metcalfe House, Delhi-110054
Contact number: 011-23902530, E-mail: director@desidoc.drdo.in, itconf2015@gmail.com

Language of paper and presentation : Hindi or English

Fees: For Participants: Rs 1000

For Paper Contributors, whose papers are selected for presentation: Nil

For more details please refer itytt.drdo.res.in

आलेख की भाषा: आलेख हिन्दी एवं अंग्रेजी में स्वीकार्य हैं।
आलेख प्रस्तुति का माध्यम: हिन्दी अथवा अंग्रेजी।

सम्मेलन शुल्क: प्रतिभागियों के लिए 1000 रुपये।

शोध पत्र प्रदाताओं के लिए कोई शुल्क नहीं, यदि उनका आलेख प्रस्तुति हेतु चयनित किया जाता है।

कृपया अधिक जानकारी के लिए itytt.drdo.res.in देखें।

नियुक्तियां

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरु



सुश्री जे मंजुला ने रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरु में निदेशक का कार्यभार 01 जुलाई 2014 से ग्रहण कर लिया है।

सुश्री मंजुला उस्मानिया विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा हैं तथा इलैक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभियंता के रूप में कार्य कर रही हैं। आपने 1987 में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में शामिल होने से पहले इलैक्ट्रॉनिक्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड में कुछ समय के लिए कार्यरत थीं। आपने रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद में एकीकृत इलैक्ट्रॉनिक्स युद्ध के क्षेत्र में 20 वर्षों से अधिक सेवा की है और आपके द्वारा अभिकल्पित फास्ट सिग्नल एक्वीजीशन रिसीवर्स, हाई पावर आर एफ सिस्टम, रेस्पॉसिव जैमर्स, कंट्रोलर सॉफ्टवेयर आदि जैसी विभिन्न प्रणालियों को सेना, नौसेना, वायु सेना तथा पैरामिलिट्री में शामिल किया गया है। आपको वाइड एरिया नेटवर्क में इलैक्ट्रॉनिक्स युद्ध प्रणाली अभिकल्पन करने और तैनात करने में व्यापक अनुभव है। संचार, रडार ई एस एम एवं ई सी एम प्रणाली के विकास में आपको विशेषज्ञता हांसिल है।

सुश्री मंजुला ने विदेशों में भी भारतीय उद्योग, शिक्षा और कंपनियों के साथ मिलकर काम किया है। डेयर के निदेशक के रूप में आपकी सेवाओं को भारतीय वायु सेना में लड़ाकू विमानों के आधुनिकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने और अगली पीढ़ी के इलैक्ट्रॉनिक्स युद्ध क्षमताओं के समावेश में लगाया जाएगा। आपको वर्ष 2011 में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त है।

लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली



श्री हरिबाबू श्रीवास्तव, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के पूर्व छात्र, ने लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली के निदेशक के रूप में 20 जून 2014 से कार्यभार

ग्रहण कर लिया है। श्री श्रीवास्तव ने अगस्त 1984 में वैज्ञानिक बी के रूप में यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून में अपनी सेवा शुरू की तथा सर्वो सिस्टम डिविजन, मुख्य डिजाइनर, फायर कंट्रोल सिस्टम, डिजाइन सेन्टर और फायर कंट्रोल सिस्टम्स ग्रुप के ग्रुप निदेशक जैसे विभिन्न प्रमुख पदों पर काम किया है। अप्रैल 2013 में उन्हें इलैक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर विज्ञान निदेशालय में निदेशक नियुक्त किया गया।

श्री हरिबाबू श्रीवास्तव यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना में एक नियंत्रण इंजीनियर के रूप में विशेषज्ञ हैं और उन्होंने इलैक्ट्रो ऑप्टिक फायर कंट्रोल और निगरानी प्रणाली-इओ सेंसर एकीकरण, लाइन ऑफ साइट स्टेबिलाइजेशन, एंबेडेड इलैक्ट्रॉनिक्स और सॉफ्टवेयर, बैलिस्टिक गणना, वीपन सिलेविंग, फायर कंट्रोल आदि जैसी बहुत सी प्रौद्योगिकियों का नेतृत्व किया है। इन प्रौद्योगिकियों का नौसेना जहाजों के लिए मुख्य युद्धपोत टैंक अर्जुन एमके प्रथम और एम के द्वितीय, इंफेन्ट्री लड़ाकू वाहन 'अभय' और हवाई बम के लिए गिम्बेल्ड लेजर सीकर जैसे विभिन्न इलैक्ट्रो ऑप्टिकल फायर कंट्रोल सिस्टम और निगरानी स्थल/प्रणालियां पर अनुप्रयोग शुरू कर दिया है। सिस्टम की सीधी जिम्मेदारी के अलावा उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं में विभिन्न डिजाइन और दूसरी समीक्षा समितियों के एक विशेषज्ञ के रूप में योगदान दिया है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय के एक थिंक टैंक के हिस्से के रूप में उन्होंने ई सी एस क्लस्टर के क्षेत्रों से संबंधित बहुत सी रिपोर्ट्स को जेनरेट किया और दीर्घकालिक एकीकृत दृष्टिकोण योजना की तत्काल आवश्यकताओं की ओर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के व्यावसायिक दृष्टिकोण को विकसित करने में वरिष्ठ वैज्ञानिकों की एक टीम का नेतृत्व किया।

श्री श्रीवास्तव ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भित पत्रिकाओं और संगोष्ठियों/सम्मेलनों की कार्यवाही में 25 तकनीकी पत्रों के अलावा कई आंतरिक रक्षा

अनुसंधान एवं विकास संगठन/रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना की रिपोर्ट्स को लिखा है। उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मोनाग्राफ 'नाइट विजन और इलेक्ट्रो ऑप्टिक टैक्नॉलोजी रिव्यू' पर सह संपादन किया है।

आप भारतीय ऑप्टिक सोसायटी (ओ एस आई) और भारतीय इंस्ट्रूमेंट सोसायटी (आई एस ओ आई) के आजीवन सदस्य हैं। आप भारतीय यंत्रीकरण समिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पूर्व सयुक्त सचिव भी हैं। वह रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन नकद पुरस्कार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन समूह प्रौद्योगिकी पुरस्कार और प्रयोगशाला समूह प्रौद्योगिक पुरस्कार के प्राप्तकर्ता हैं।

पुरस्कार

उत्कृष्ट समीक्षा पुरस्कार



डॉ वाई के नागले, वैज्ञानिक एफ, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली को इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एवं इंडिविजुअल डिफरेंसस द्वारा समीक्षा के लिए और इंटरनेशनल सोसायटी फॉर स्टडी ऑफ इंडिविजुअल डिफरेंसस द्वारा पत्रिका की गुणवत्ता के लिए उनके उत्कृष्ट योगदान के सम्मान में प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है। डॉ नागले इंटरनेशनल सोसायटी फॉर स्टडी ऑफ इंडिविजुअल डिफरेंसस की इस अधिकारिक पत्रिका के एक विशेषज्ञ बाहरी (एक्सटर्नल) समीक्षक हैं।

श्री जे शंकर कुमार, वैज्ञानिक डी, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु को क्रैनफील्ड विश्वविद्यालय, बिट्रेन के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग द्वारा अपनी शैक्षणिक उपलब्धि की मान्यता में बेस्ट इंजन सिस्टम सिंपोजियम पेपर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। बरोनेस बारबरा यंग ऑफ ओल्ड स्कोन के कुलपति ने 6 जून 2014 को आयोजित स्नातक समारोह की अध्यक्षता की। ब्लेड टिप टाइमिंग टेक्नीक्स पर 24 देशों के लेखकों के 151 शोध पत्रों में से उनका तकनीकी शोध पत्र चुना गया। शोध पत्र में विभिन्न हाई साइकिल फेटिंग (एच सी एफ) शमन तकनीकों को सैनिक, औद्योगिक और नागरिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया है।

सर्वोत्तम शोध पुरस्कार



कुलाधिपति से प्रशंसा पाते हुए श्री जे शंकर कुमार।

युवा तकनीकी नवाचार पुरस्कार



डॉ आर ए माशेलकर से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुश्री संचिता सिल।

सुश्री संचिता सिल, वैज्ञानिक सी, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे को भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद (प्रौद्योगिकी एज श्रेणी के तहत) में आयोजित पुरस्कार समारोह में सोसायटी फार रिसर्च एंड इनीशिएटिव्स सस्टेनेबल टेक्नॉलोजीज एंड इंस्टीट्यूट्स (एस आर आई एस टी आई) की ओर से गांधीवादी युवा प्रौद्योगिकी अनुभव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ आर ए माशेलकर ने सुश्री संचिता सिल को पुरस्कार प्रदान किया।

राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार

डॉ ए के सन्नीग्रही, वैज्ञानिक एफ, प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर को मानवीय संसाधन विकास के क्षेत्र में उनकी सराहनीय सेवाओं में 12 जून 2014 को राष्ट्रीय एकता इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, दिल्ली में आयोजित आर्थिक विकास और राष्ट्रीय एकता पर एक सेमिनार में इंडिया इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी द्वारा उनके उत्कर्ष योगदान के लिए राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



उच्च अर्हता प्राप्ति

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु



कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु के श्री एन एन आर रंगासूरी, वैज्ञानिक ई को उनके शोध शीर्षक 'आउटलियर डिटेक्शन विथ एप्लीकेशंस इन ग्राफ डाटा माइनिंग' के लिए आई आई एस सी, बैंगलूरु द्वारा कम्प्यूटर साइंस

तथा ऑटोमेशन में पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद



रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद के वैज्ञानिक जी, श्री जे वी आर सागर को हैदराबाद विश्वविद्यालय से कम्प्यूटर साइंस में उनके शोध शीर्षक रोबस्ट टेक्नीक्स एंड स्टोकास्टिक रिसोनेन्स फार सैगमेंटेशन ऑफ

नोयजी इमेज के लिए डॉक्टरेट (पी एच डी) की उपाधि से सम्मानित किया गया।

पाठकों की राय

आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी तथा सूचनाप्रद बनाने तथा संगठन को बेहतर रूप में अपनी सेवा उपलब्ध कराने के अवसर प्राप्त होते हैं। डी आर डी ओ समाचार अपने सम्मानित पाठकों से प्रकाशित सामग्रियों तथा विषयों की गुणवत्ता के बारे में अपने सुझाव प्रेषित करने का अनुरोध करता है। कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:

संपादक, डी आर डी ओ समाचार, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), मेटकॉफ हाउस,
दिल्ली-110054 ई-मेल : director@desidoc.drdo.in

डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलूरु



लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चैत को सुरक्षा समाधानों के बारे में बताया जा रहा है।

16 जून 2014 : लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चैत, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, एडीसी, सी आई एस सी और टीम। श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र ने सेना के लिए कमान और नियंत्रण अनुप्रयोगों, सूचना सुरक्षा समाधान और सुरक्षित प्रणाली निर्माण के लिए आवश्यक चुनौतियों और प्रौद्योगिकियों के बारे में दर्शकों को जानकारी दी।

रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद



श्री दास, कैप्टन संदीप शर्मा से बातचीत करते हुए।

24 जून 2014 : कैप्टन संदीप शर्मा, पी डी एन एस रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद। श्री एस पी दास, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी एल आर एल ने दर्शकों को चल रही परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी। समुद्रिका के कार्यक्रम निदेशक, डॉ एम लक्ष्मीनारायण, सैम-एस के

परियोजना निदेशक, रियर एडमिरल रंजीत सिंह और सैम-ए के परियोजना निदेशक, श्री एस डी मालेश्वर राव ने प्रयोगशाला की नौसेना प्रौद्योगिकी परियोजनाओं की गतिविधियों पर जानकारी दी।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे



डॉ ए अप्पाराव, सह निदेशक, एच ई एम आर एल, मेजर जनरल एस के दुआ विस्फोटक उत्पादकों के बारे में बताते हुए।

13 जून 2014 : मेजर जनरल एस के दुआ, सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, एडीजी (पी आर ओ सी) ने उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल) पुणे। उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला में चल रही परियोजनाओं के बारे में जनरल दुआ को विस्तारपूर्वक बताया गया।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर

19 जून 2014 : एफ एम विश्वविद्यालय, बालासोर के कुलपति, प्रो. शिवा प्रसाद अधिकारी। आपने विश्वविद्यालय द्वारा आयुध परीक्षण तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में विभिन्न अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं पर गहरी रुचि दिखायी। आपने अनुसंधान तथा विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए एफ एम विश्वविद्यालय तथा पी एक्स ई के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का सुझाव दिया। आपने अनुसंधान तथा विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए एफ एम विश्वविद्यालय तथा पी एक्स ई, चांदीपुर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।



श्री अप्पावुराज, निदेशक, पी एक्स ई, प्रोफेसर अधिकारी को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

23 जून 2014 : प्रोफेसर ए के महापात्र निदेशक अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर । उन्होंने आघात के क्षेत्र में संयुक्त सहयोग का सुझाव दिया। उन्होंने 'सिर की चोट' पर एक व्याख्यान भी दिया।



श्री अप्पावुराज, निदेशक, पी एक्स ई, प्रोफेसर महापात्र को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे), मनाली

21 जून 2014 : डॉ अविनाश चन्दर रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव, तथा महानिदेशक, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन। उनके साथ डॉ सतीश कुमार, मुख्य नियंत्रक



डॉ अविनाश चन्दर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सेंसर अभिकल्पन तथा परीक्षण प्रायोगशाला का उद्घाटन करते हुए।

अनुसंधान तथा विकास, प्रौद्योगिकी प्रबंधन (टी एम) भी गये थे। सासे के निदेशक, श्री अश्वघोष गंजू ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया और उन्हें सासे की गतिविधियों के बारे में बताया।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना में चल रही वर्तमान और बनायी गयी भावी परियोजनाओं की समीक्षा की और क्राईओस्फेरिक क्षेत्र में प्रयोगशाला द्वारा प्रौद्योगियों के विकास में किये जा रहे कार्यों की सराहना की। आपने पहाड़ों में अनमोल जीवन को बचाने में सासे के कार्यों की सराहना की।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने सुझाव दिया कि सासे को उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में सटीक भविष्यवाणी के कार्य को अपने हाथ में ले लेना चाहिए और सही वर्षा और बादल फटने जैसी घटनाओं के पूर्वानुमान के लिए हिमालय के क्षेत्र में ड्रापलर मौसम रडार के समूह की स्थापना करनी चाहिए।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने सासे में सेंसर डिजाइन और जाँच प्रयोगशाला का उद्घाटन किया।

मुख्य सम्पादक	सह मुख्य सम्पादक	सम्पादक	सहायक सम्पादक	सम्पादकीय सहायक	मुद्रण	विपणन
सुरेश कुमार जिंदल	बी नित्यानंद	फूलदीप कुमार	अशोक कुमार दीप्ती अरोड़ा	शालिनी छाबड़ा संजय कटारे	एस के गुप्ता हंस कुमार	आर पी सिंह

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23813465 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in